अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





वर्षा, जल समस्या
Rain and water Problem

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

वर्षा, जल समस्या **Rain and water Problem**

अध्याय शीर्षक	वर्षा, जल समस्या
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
	ग्राम – अछरौन्ड,
	बान्दा – 210 001
	उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Rain and water Problem**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi**
	Village - Achharaund
	Banda - 210 001
	Uttar Pradesh
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

वर्षा, जल समस्या **Rain and water Problem**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

वर्षा, जल समस्या **Rain and water Problem**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – वर्षा, जल समस्या का संक्षिप्त वर्णन

वर्षा, जल समस्या **Rain and water Problem**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

जिला एक नज़र में– ई0 2000–2009

जिला एक नजर में

1 सामान्य जानकारी

(1) भौगोलिक क्षेत्र(वर्ग किमी)		4460
(2) प्रशासनिक प्रभाग(31–3–2008 की स्थिति के अनुसार)		
	क) कुल तहसील	4
	ख) कुल ब्लॉक	8
	ग) कुल पन्चायतों	71
	घ) कुल गांव	694
(3) जनसन्ख्या(2001 की जनगणना के अनुसार)		15,01,610
(4) औसत वार्षिक वर्षा(मिमी)		902

2 भू–आकृति विज्ञान

प्रमुख भू–आकृति इकाइयाँ जलोढ़ मैदान, सीमांत जलोढ़ और उच्च्य भूमि(कठोर चट्टान)
प्रमुख जल निकासिया यमुना, केन और बाघेन नदी

3 भूमि का उपयोग(हे.) वर्ष 2008

(1) वन क्षेत्र	5421
(2) शुद्ध बोया गया क्षेत्र	336000
(3) कृषि योग्य क्षेत्र	उपलब्ध नहीं

4 प्रमुख मृदा प्रकार मिट्टी, गाद, रेत और काली कपास मिट्टी

5 प्रमुख फसलों के अन्तर्गत क्षेत्र (2009 की स्थिति के अनुसार)

रबी	275539	हैक्टेयर
खरीफ	129966	हैक्टेयर
जैद	203	हैक्टेयर

6. विभिन्न स्रोतों द्वारा सिन्चाई(हेक्टेयर में क्षेत्र और सन्रचनाओं की सन्ख्या)

(1) डगवेल		17,413
(2) नलकूप/बोरवेल	460 नग	85,121
(3) टैंक/तालाब		3,272
(4) नहरें(लम्बाई =	1193 किमी)	50,627
(4) अन्य स्त्रोत		1,371
(4) शुद्ध सिन्चित क्षेत्र		1,53,804
	सकल सिन्चित क्षेत्र	1,69,816

7 सीजीडब्ल्यूबी के भूजल निगरानी कुओं की सन्ख्या(2009 के अनुसार)

(1) डगवेल की सन्ख्या	23
(2) पीजोमीटर की सन्ख्या	01

8 प्रमुख भूवैज्ञानिक सन्रचनाएं

वर्षा, जल समस्या **Rain and water Problem**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बुंदेलखंड ग्रेनाइट निचली सतह विंध्य द्वारा असन्गत रूप से ओवरलैन होते हैं, जो चतुर्धातुक जलोढ़ द्वारा असन्गत ओवरलैन होते हैं।

9 जलभूविज्ञान एवम् जलभृत्त समूह

प्रमुख जलवाहक सन्घटन	जलोढ़ एवम् कठोर शैल निर्माण
(मई, 2009 के दौरान मानसून पूर्व गहराई से जल स्तर तक)	2.75–26.95 एमबीजीएल
(मानसून के बाद नवम्बर, 2009 के दौरान जल स्तर की गहराई)	1.40–22.50 एमबीजीएल
10 वर्षों(2000–2009) में दीर्घावधि जल स्तर रूझान एम/वर्ष में	

मटौन्ध को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्रों में गिरावट की प्रवृत्ति का सामना करना पड़ रहा है।

10 सीजीडब्ल्यूबी द्वारा भूजल अन्वेषण(2008 की स्थिति के अनुसार)

ड्रिल किए गए कुओं की सन्ख्या(EW, OW, PZ, SH,कुल)	EW02, SH02,
गहराई सीमा(मी)	43.60–166.15 एमबीजीएल
डिस्चार्ज(लीटर प्रति सेकंड)	13.84 से 35.00
स्टोरैटिविटी(एस)	–
सम्प्रेषणीयता(मी^{2}/दिन)	1341 से 2236

11 भूजल गुणवत्ता(मई 2008)

अनुमेय सीमा से अधिक रासायनिक घटकों की उपस्थिति (जैसे म्ब्ए थ्ए छव्3ए ेए थ्म)	छव्3
पानी का प्रकार	पॉकेट को छोड़कर पीने योग्य

12 गतिशील भूजल सन्साधन(2004)–एचएएम में

वार्षिक पुनर्भरणीय भूजल सन्साधन	88095.48
सकल वार्षिक भूजल ड्राफ्ट	29552.49
2029 तक घरेलू औद्योगिक उपयोग की अनुमानित मांग	50247.33
भूजल विकास की स्थिति	36.71प्रतिशत

13 जागरूकता और प्रशिक्षण गतिविधि

जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित	उपलब्ध नहीं
तिथि	–
स्थान	–
प्रतिभागियों की सन्ख्या	4
जल प्रबन्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम(कृत्रिम रिचार्ज) का आयोजन	–
तारीख	–
स्थान	–
प्रतिभागियों की सन्ख्या	–

14 कृत्रिम पुनर्भरण और वर्षा जल सन्चयन परियोजनाओं के प्रयास

सीजीडब्ल्यूबी द्वारा पूरी की गई परियोजनाएं(खर्च की गई राशि की सन्ख्या)	शून्य
सीजीडब्ल्यूबी के तकनीकी मार्गदर्शन के तहत शून्य परियोजनाएं(सन्ख्या)	शून्य

15 भूजल नियंत्रण और विनियमन

वर्षा, जल समस्या **Rain and water Problem**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

ओई ब्लॉकों की सन्ख्या शून्य
क्रिटिकल ब्लॉकों की सन्ख्या शून्य
अधिसूचित ब्लॉकों की सन्ख्या शून्य

बांदा जिला, उत्तर प्रदेश के गतिशील भूजल सन्साधन(31.03.2004 की स्थिति के अनुसार)

ॽण छवण	ॊमेउमदज न्दपजे ठसवबो	ॉददनंस – ळतवनदक ॑जमत त्मबींतहम ;पद ींउद्ध	छमज ॉददनंस ळतवनदक ॑जमत ॉअंपसंइपसपजल ;पद ींउद्ध	ग्ध्पेजपदह ळतवे ळतवनदक ॑जमत क्तंजि थ्वत ॉसस न्मे;पद ींउद्ध	छमज ळतवनदक ॑जमत ॉअंपसंइपसपजल थ्वत थ्नजनतम प्ततपहंजपवद क्मअमसवचउमदज;पद ींउद्ध	ॽजंहम वि ळतवनदक ॑जमत क्मअमसवचउमदज;प द :द्ध	ब्जमहवतल वि ठसवबा
1	ठंइमतन	10507.27	9456.54	3948.13	5414.40	41.75	सुरक्षित
2	ठंतवींत	13180.31	11862.28	4535.57	7218.72 38.	24.00	सुरक्षित
3	ठपेंदकं	12116.97	10905.27	2721.52	8118.95	24.96	सुरक्षित
4	श्रेंचनतं	5085.68	4577.11	2742.11	1769.71	59.91	सुरक्षित
5	ड्ढांउेंपद	10726.82	10190.48	2853.72	7268.81	28.00	सुरक्षित
6	डीनं	14389.28	12950.35	3713.91	9148.02	28.68	सुरक्षित
7	छंतंपदप	8465.62	7619.06	3794.34	3734.37	49.80	सुरक्षित
8	ज्पदकूंतप	13623.54	12942.37	5243.19	7574.34	40.51	सुरक्षित
	ज्व्ज्।स्	88095.48	80503.45	29552.49	50247.33	36.71	

16 प्रमुख भूजल समस्याएं और मुद्दे जल भराव और पानी की कमी

17 वर्षा और जलवायु

औसत वार्षिक वर्षा 902.00 मिमी है। जलवायु विशिष्ट उपोष्णकटिबन्धीय है जो लंबे और तीव्र ग्रीष्मकाल से प्रवेश करती है। वार्षिक वर्षा का लगभग 80प्रतिशत दक्षिण–पश्चिम मानसून से प्राप्त होता है। मई सबसे गर्म महीना रहा जब पारा 52.00 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। मध्य जून तक मानसून के आगे बढ़ने के साथ ही तापमान कम होने लगता है। जनवरी आमतौर पर सबसे ठंडा महीना होता है जब तापमान 5.80 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। सापेक्ष आर्द्रता अगस्त में सबसे अधिक, लगभग 85प्रतिशत और अप्रैल में सबसे कम है।

4.0 भूजल परिदृश्य

इस जिले की विशेषता जलोढ़, सीमांत जलोढ़ और कठोर चट्टानी भू–भाग हैं। भूजल झरझरा गठन में होता है, फ्रैक्चर/जोड़ों की द्वितीयक छिद्र में रेत बजरी कार्य करता है।

4.1 जलभूविज्ञान

जलभूवैज्ञानिक सूचना के आधार पर जलोढ़ में भू–जल उथली गहराइयों में असीमित स्थितियों में तथा सीमित स्थितियों में गहरी गहराई में होता है। जिले में जलोढ़ की मोटाई 4500 से 20000 एमबीजीएल के बीच है। ग्रेनाइट(बुंदेलखंड) में भी अच्छी क्षमता और किफायती निर्वहन पर उपज है। भूजल कठोर चट्टान में फ्रैक्चर और जोड़ों में होता है। कुछ स्थानों पर लगभग 28.00 से 96.00 मीटर तक सम्भावित फ्रैक्चर का सामना करना पड़ता है।

गहराई से जल स्तर

वर्ष 2009 में 27 स्थायी भूजल निगरानी स्टेशनों के जल स्तर की गहराई सम्बन्धी आंकड़ों के अनुसार मानसून–पूर्व जल स्तर 275 एमबीजीएल(खुरहांड) से 2695 एमबीजीएल(भीतरर केर डेरा) के बीच है। मानसून के बाद की अवधि में जल स्तर की गहराई 095 एमजीबीएल(गिरवां) से 2250 एमजीबीएल(पेलानी) तक बदलती रहती है। जल स्तर में उतार–चढ़ाव रोलीहदयाजू में 00 मी से नरैनी में 802 मी तक भिन्न–भिन्न होता है। यह देखा गया है कि पहाड़ी और चट्टानी क्षेत्र में उतार–चढ़ाव मैदान की तुलना में अधिक होता है। उतार–चढ़ाव अधिक होता है जहां कम ऑर्डर स्ट्रीम पाए जाते हैं।

दीर्घकालिक जल स्तर प्रवृत्ति

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

दस वर्षों में 27 राष्ट्रीय हाइड्रोग्राफिक स्टेशनों(2000–2009) से क्षेत्र में दीर्घकालिक जल स्तर प्रवृत्ति रिकॉर्ड बताते हैं कि(मतौध को छोड़कर) अन्य सभी कुओं में गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई दे रही है। गिरने की प्रवृत्ति पपरेंडा में 0.0979 मीटर/वर्ष(गिरवान) से 1.5087 मीटर/वर्ष तक है।

4.2 भूजल सन्साधन

31–2–2004 की स्थिति के अनुसार बांदा जिले के गतिशील भूजल सन्साधन सम्बन्धी रिपोर्ट के अनुसार। जिले का वार्षिक भूजल पुनर्भरण 88095.48 हैम(ंउ) है। शुद्ध वार्षिक भूजल उपलब्धता 80503.45 हैम(ंउ) है। सभी उपयोगों के लिए मौजूदा सकल भूजल ड्राफ्ट 29552.49 हैम(ंउ) है। भावी सिन्चाई विकास के लिए निवल भूमि जल उपलब्धता 5024733 हैम(ंउ) है। भूजल विकास की अवस्था 3671प्रतिशत है। तैयार किए गए अनुमानों के अनुसार, जिले के सभी ब्लॉक सुरक्षित श्रेणी में हैं।

4.3 भूजल गुणवत्ता

विद्युत चालकता 250ब पर 570 से 2600 उध्बउ की सीमा में है। कुल कठोरता 110 से 400 मिलीग्राम/लीटर तक है। फ्लोराइड 0.16 से 0.89 मिलीग्राम/लीटर और नाइट्रेट 306 मिलीग्राम/लीटर तक होता है जो उच्च है। फॉस्फेट अनुपस्थित है।

4.4 भूजल विकास की स्थितिः

भूजल जलोढ़ में रेत, बजरी और कंकड़ जैसे छिद्रपूर्ण गठन में होता है जबकि कठोर चट्टानी क्षेत्रों में द्वितीयक सरन्ध्रता में। जिले में भूजल विकास का चरण बहुत कम 36.71प्रतिशत है। प्रदेश में 460 राजकीय नलकूप हैं, सर्वाधिक सन्ख्या तिंदवारी विकासखण्ड में 151 और नरैनी विकासखण्ड में न्यूनतम सन्ख्या 02 है।

जिले में नहर की लंबाई 1193 किमी है जिससे 50627 हेक्टेयर भूमि की सिन्चाई होती है जो शुद्ध सिन्चित क्षेत्र का 35.04 प्रतिशत है जो पिछले सन्साधन क्षमता(1/4/2000) से मामूली कम है। सीजीडब्ल्यूबी ने अन्वेषणात्मक कार्यक्रम के तहत 13 अन्वेषणात्मक कूपों और 02 स्लिमहोलों का निर्माण किया है। बोरवेलों/नलकूपों की उपज किफायती ड्रॉडाउन के साथ 180 एलपीएम से 3811 एलपीएम तक होती है।

बांदा जिला, उत्तर प्रदेश की राज्य एजेंसी गतिशील भूजल सन्साधन द्वारा 1257584 की आबादी को लाभान्वित करते हुए जिले में कुल 660 हैंडपम्पों का निर्माण किया गया है।

तालाब

1	तालाब	कच्चा तालाब
2	तालाब	कजलिया तालाब, निम्नी पार
3	तालाब	कन्धरदास तालाब
4	तालाब	कलामत ताला
5	तालाब	केवटन तालाब, केवटरा
6	तालाब	गौरी बाबू का तालाब
7	तालाब	नवाब तालाब
8	तालाब	परशुराम तालाब, गायत्री नगर
9	तालाब	प्राची तालाब
10	तालाब	प्रागी तालाब
11	तालाब	बडा तालाब, तिदवारी रोड
12	तालाब	बाबा तालाब इन्दिरानगर के उत्तरी छार पर
13	तालाब	साहब तालाब, जरैली कोठी, कर्बला रोड

वर्षा, जल समस्या **Rain and water Problem**

14	तालाब	सेढ़ू तलैया
15	तालाब	शिर्डी तलैया/गगगगगग
16	तालाब	हरदौल तलैया
17	तालाब	भरभूजन का तालाब, मढिया नाका
18	तालाब	राजा का तालाब, खिन्नी नाका, गुमान सिन्ह ने मरम्मत कराया।
19	तालाब	छाबी तालाब
20	तालाब	लोहार तलैया, मर्दन नाका
	सन्दर्भ	**bnda hist kua talab name jalvayu water data destuction**

लोगों के अपने प्रयास

जलवायु सम्बन्धी तमाम विसन्गतियों के बाद भी लोगों ने अपनी आजीविका के मजबूत आधार विकसित कर लिए थे। यहां की भौगोलिक सम्पदा तथा थोड़े में काम चला लेने की अपनी प्रवृत्ति के बूते यहां किसान और गांव खूब खुशहाल थे। लोगों ने जो प्रयास किए थे वह इस प्रकार थे।

सागर जैसे तालाब

समूचे बुन्देलखण्ड में तालाबों का जाल बिछा है। तालाब इतने बड़े और गहरे कि उनका नाम सागर के साथ जुड़ता है। कुएं इतने गहरे इतने बड़े की किसी भी विपदा में धोखा नहीं दिया। पेड़ पौधे इतने कि उनके बीच गांव तलाशना मुश्किल। पेड़ लगाना, कुंआ तथा तालाब खुदवाना लोग पुण्य, प्रतिष्ठा और सम्पन्नता दर्शाने के लिए करते थे।

ऊँची चौड़ी मेंड़े

गांव के चारो तरफ फैले खेत किसान को हर किस्म की मिट्टी में खेती करने के अवसर देते थे। खेत के चारो तरफ ऊंची और चौड़ी मेड़े की खेत में घुटनों तक पानी भरा रहे और मेड़ के ऊपर से बैलगाड़ी निकल जाए। इतना ही नहीं इस क्षेत्र में हजारों हजार बीघे की बड़ी–बड़ी बन्धियां आज भी अपने खत्म होते अस्तित्व के साथ विद्यमान हैं जो पूरे तीन महीने खेतों को पानी से भरकर उनकी मिट्टी को सड़ा उपजाऊ बनाती और भूगर्भ जल का भरण करती थीं।

मानवकृत दैवीय आपदाएं

देशी शासकों ने केवल वोट की लालच में अनावश्यक, अवैज्ञानिक तथा धटिया तकनीकि से यहॉ नदियों में बॉध, पुल, रपटे तथा चेक डैम बनाए गये जिन्होने बुन्देलखण्ड में उसी वर्ष सुखा और उसी वर्ष बाढ़ को निरन्तरता प्रदान की।

बुन्देलखण्ड के मशहूर गॉव–गॉव में फैले चन्देल कालीन तालाब कूडेदान बन गए जिनमें अब शहरों में मकान और गॉवों में खेत बना डाले गये। कृषि की उन्नत तकनीकि और बीजो के लिए यहॉ के किसान को पहले आदी बनाया गया और जब वह आदी हो गया तब वह सारी चीजे किसान की पहुॅच से साजिशन दूर कर दी गयी।

यहां की वार्षिक औसत वर्षा 760 मि.मी. है। जिन सालों में यहां भयंकर सूखा पड़ता है उन सालों में भी यहां राष्ट्रीय वार्षिक औसत वर्षा से अधिक पानी ही बरसता है। याद करें 1964 का साल।

फिर भी सूखा

इस क्षेत्र में वार्षिक वर्षा की कुल पानी दो से पान्च दिनों के अन्तराल ही में बरस जाता है। शेष साल सूखा रहता है चूकि मेड़े और बन्धियां सब टूट गयी हैं अतः बरसात का पानी अपने साथ खेतों की उपजाऊ मिट्टी भी बहाता हुआ नदियों के साथ सागर में समा जाता है और साल भर के लिए यहां सूखा छोड़ जाता है।

वर्षा, जल समस्या **Rain and water Problem**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सूखा और बाढ़ एक साथ

यह आश्चर्य जनक किन्तु सत्य है कि इस क्षेत्र में सूखा और बाढ़ एक साथ ही अपना साम्राज्य कायम करता है। एक साथ बरसा पानी नदियों में भीषण बाढ़ और उससे तबाही मचाता है और फिर शेष दिनों में पानी न बरसने के कारण यहां सूखा रहता है।

चरम पर गर्मी और चरम पर ठण्डक

कहने को तो समशीतोष्ण जलवायु का क्षेत्र है लेकिन इस क्षेत्र का तापमान 20^0 न्यूनतम तथा 52^0 अधिकतम तक पहुंचता है। तापमान की इस विचित्रता के कारण वह वनस्पति जो क्षेत्र में आद्रता सन्तुलन में सहायक होती थी अब पूरी तरह से विलुप्त होती जा रही है।

नदियों के प्रभाव के कारण यहां भूगर्भ जल काफी नीचे लेकिन नदियों से दूर के क्षेत्रों में जलस्तर काफी ऊपर भी है। यह क्षेत्र खनिज सम्पदा का भी धनी है। ग्रेनाइट, सैण्ड स्टोन, रंगीन पत्थर, उच्च किस्म की मोरम, लोहा, ताम्बा, सोना तथा हीरे भी यहां पाए जाते हैं।

यहां यमुना, केन, बेतवा, बागैन, पयश्वनी, चन्द्रावली, विरमा, गड़रा, गुन्ता, चम्बल तथा धसान जैसी विशाल और बारहमासी नदियां तथा सैकड़ों की तादाद में बरसाती नाले और नदियों का यहां जाल फैला है।

जल समस्या केन नदी

बांदा शहर के एक चौथाई भूभाग में लगभग 26000 से ज्यादा घरों को पेय जल की आपूर्ति रेलवे पुल के पास से केन नदी से सप्लाई की जाती है। कभी हमेशा भरी हुई नदी अब सूखते हुए खत्म होने के कगार पर है। पिछले कुछ समय से गर्मी में पानी के लिए लोग मुसीबत में रहते थे लेकिन अब, लगभग (2024ई0) सर्दी में भी लोगों को पानी की मुसीबत अब गाहे बेगाहे तो हो रही है। सर्दी में जब नदियों में काफी पानी होता है केन में महज 5 एमएलडी /मिलियन लीटर पर डे/ मिलियन लीटर प्रति दिन(मिलियन का अर्थ 10लाख) पानी ही सप्लाई हो पा रहा है जबकि इस एक चौथाई एरिया के लिए 10 एमएलडी पानी की आवश्यकता है। गर्मी में जहां 30 मिनट पानी आ जाता था अभी सर्दी की शुरुआत और वर्षा के खत्म होते ही महज 15 से 20 मिनट पानी ही दिया जा रहा है। लोगों को अब पुराने हैंडपंप तालाब कुए की याद आ रही है, लेकिन इससे भी क्या होगा, सभी खत्म हो चुके है। 20–25 साल पहले अप्रैल महीने में केन नदी का जलस्तर 90–100मी हुआ करता था।

ग्रामीण क्षेत्र की दुर्दशा अब केवल महज देखने योग्य है। केन नदी के इस हालत का मुख्य कारण अवैध खनन या वैध खनन ही है। पूरी केन नदी का रेत इस तरह से निकल गया है की रेत देखने के लिए नहीं है, केवल पत्थर ही बचे हैं। किसी भी नदी का जीवन रेत ही है जैसे मनुष्य के जीवन में खून हर जगह मौजूदहै। रेत निकाल लिया गया तो रेत जो पानी को संचित करके रखती थी उसका स्रोत खत्म हो गया और प्राकृतिक प्रवाह कमजोरी या खत्म हो गया। जल धारण क्षमता तो बची ही नहीं, सोने में सुहागा, केन बेतवा नहर भी है। केन का पानी बेतवा में डाल दिया जाता है और बताया जाता है कि सिंचाई में काम आएगा जबकि वास्तविकता यह है कि केन नदी के आसपास जितने भी गांव है सभी सुखे के चपेट में आने शुरू हो चुके हैं। जनसंख्या बढ़ रही है। पानी की कमी से सिंचाई नहीं होती, पीने के पानी आवश्यकता कई गुना हो गई है। केन के पास कहीं भी खड़े हो जाए, नवंबर के अंत में ही सूखती और मरती हुई केन का हाल देखा जा सकता है और पैदल ही विशाल नदी को पार किया जा सकता है। कुछ लोग इसे बदलते हुए वर्ष चक्र को दोषी ठहराते हैं। वातावरण का गर्म होना व ठन्डा होना, यह तो मौसम का चक्र है इससे पहले भी वैज्ञानिकों के अनुसार चार पांच बार हिम युग आ चुका है मतलब 5–6 बार पूरी पृथ्वी का पानी जो बर्फ में था खत्म होकर पानी में ही बदल गया उसके बाद फिर बर्फ बन गया। बजाय इसको दोष देने के, बांदा जिले के पिछले 100 साल के इतिहास को देखा जाए और केन रेत के दोहन के साथ इसका मिलान किया जाए तो शायद कथित जल संरक्षकों को समझ में आए।

जलवायु

अपने अक्षांश तथा देशान्तर विस्तार की वजह से यहां की जलवायु भी अत्यन्त जटिल है। अत्याधिक बरसात वह भी कुछ समय में। अत्याधिक ठण्डक तथा अत्याधिक गरमी।

वर्षा, जल समस्या **Rain and water Problem**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

जनपद	औसत वर्षा मिमी	औसत आद्रता दर		तापमान	
		न्यूनतम	अधिकतम	न्यूनतम	अधिकतम
बांदा	750	16	60	2^0 सेन्टीग्रेड	50^0 सेन्टीग्रेड
चित्रकूट	875	14	72	2^0 सेन्टीग्रेड	52^0 सेन्टीग्रेड
हमीरपुर	725	16	70	2^0 सेन्टीग्रेड	49^0 सेन्टीग्रेड
महोबा	700	15	65	2^0 सेन्टीग्रेड	49^0 सेन्टीग्रेड

वर्षा, जल समस्या **Rain and water Problem**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ / सौजन्य / साभार

ठंदक ।ज्स्त स्।टम्स

ळंमजजममत वि्दकपं न्जजंत च्तंकमीए क्पेजतपबज ठंदकंऋ

ीजजचेरू्ध्ध्ंतबीपअमण्वतह्ध्कमजंपसध्कसपण्बेसण्2889ध्2889ऋकरअनण्जगज

ब्सपउंजम

त्ंपद ंच्हम42.48ध्17.20

बांदा जिला, उत्तर प्रदेश का भूजल विवरणिका द्वारा टी.के. पन्त सहायक जलविज्ञानी

वर्षा, जल समस्या Rain and water Problem